Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-XI Nov. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

कहानीकार यशपाल - एक अध्ययन

- डॉ. लीला कर्वा,
लातूर.

हिन्दी प्रगतिवादी लेखकों में यशपाल का नाम महत्वपूर्ण है । यशपाल केवल प्रगतिवादी नहीं बल्कि कर्मठ साहित्यकार एवं विवेकशील विचारक हैं ।उनका साहित्य अतिरंजना से उन्मुक्त एक यथार्थ रुप लिए हुए है जिसमे एक बौध्दिक रुप निहित रहता है। जीवन की सामाजिक, राजनीतिक, व्यक्तिगत और कामवासनाओं का मनोविश्लेषनात्मक चित्रण उनके साहित्य में मिलता है ।

यशपाल सशक्त उपन्यासकार संवेदनशील कहानीकार के साथ नाटककार और वैचारिक निबंधकार के रुप में प्रसिद्ध हैं । हिंदी साहित्य में प्रेमचन्द के पश्चात यशपाल ही दूसरे क्रांतिकारी उपन्यासकार हैं ।

दादा कामरेड, देशद्रोही, दिव्या, पार्टी कामरेड, मनुष्य के रुप, अमिता, झुठा सच, बारह घंटे तथा क्यौं फंसे, यह उनके उपन्यास लेखक की सशक्त प्रौढ़ लेखन कला का परिचायक हैं ।

कहानीकार यशपाल एक संवेदनशील लेखक है । यशपाल ने अपने बारह कहानी संग्रहों में लगभग दोसौ कहानियाँ हिन्दी साहित्य को प्रदान की । पिंजरे की उड़ान, वो दुनिया, ज्ञानदान, अभिशप्त, नरक का तूफान, भस्मावृत चिंगारी, फूलों का कुर्ता, धर्मयुध्द, उत्तराधिकारी, तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हुँ और उत्तरा की माँ यह उनके कहानी संग्रह प्रकाशित हैं ।प्रसिध्द आलोचक विद्वान डॉ. नगेन्द्र उनकी कहानियों की सफलता के विषय में लिखते हैं *यशपाल हिन्दी के उन गद्य लेखकों में हैं, जिनकी पारदर्शी दृष्टि समाज के नाना स्तरों, जीवन की विविध स्थितियायें और मानव मन की सुप्त मनोवृत्तियों का उदघाटन करने की अद्‌भुत क्षमता रखती है* ।

समाज के वैषम्य पर प्रहार करते समय प्रखर व्यंग उनकी अभिव्यक्ति का मेरुदंड बनता है । धर्म और नीति के रुढ़िग्रस्त निर्माण का आग्रह उनकी कला का अंग बन गया है । सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं के चित्रण में यशपाल ने प्रायः मध्य या निम्न वर्ग के पात्रों की अवतारणा कर उनके प्रति करुणा, समवेदना आक्रोश या उदबोधन का भाव व्यक्त किया है । वह अपने प्रभाव में कहीं भी निष्फल नहीं है - यही लेखक की सफलता है ।

जीवन के हर समस्या और हर वर्ग मजदूर, किसान, नारी, वेश्या, साहुकार, बालकों की मनोवृत्ती का चित्रण उनके कहानीयों में चित्रित किया है।हाय राम ये बच्चे कहानी में हिन्दु मुस्लिम सांप्रदायिकतों को उजागर करते हुए यशपाल ने बाल मन की निष्पाप वृत्ति, सहज सरलता का अत्यंत स्वाभाविक वर्णन किया है । *आदमी और पैसा* कहानी के माध्यम से लेखक ने आर्थिक अभाव ग्रस्त मनुष्य मानविय नीतिमूल्यों को अपनाता या ठुकराता है यह व्यक्त किया है । इस कहानी के दोनो पात्र *राम* एक शिक्षित युवक, *झरना* वेश्या का आर्थिक अभव में नैतिक स्तर कैसे गिरता है यह स्पष्ट किया है । झरना का यह वाक्य *बाबु आदमी बड़ा छोटा नहीं होता, उसे पैसा बनाता है, और मेरे पास सिर्फ आदमी नहीं उसका पैसा सोता है* शिर्षक की सार्थकता उजागर करता है । *साद और चोर* में यही समस्या को चित्रित किया है ।

नारी को अपने मनोरंजन एवं काम तृप्ति का साधन बनानेवाली पुरुष संस्कृति पर उन्होंने व्यंग किया है । *पाँव तले की डाल* तथा *एक सिगरेट* नारी समस्या को प्रस्तुत करनेवाली कहानियाँ हैं । पाँव तले की डाल में ब्रजनंदन अपने मित्र से अपने मनोरंजन के लिए किसी लड़की को लाने के लिए कहता है, किन्तु उसका मित्र जिस लड़की को लाता है वह ब्रजनंदन की बहन निकलती है । ब्रजनंदन के क्रोध भरे सवाल पर उसका मित्र कहता है, हर लड़की किसी न किसी की बहन होती है । *एक सिगरेट* कहानी में नारी की पराधिनता और उसकी विवशता का चित्रण किया है ।

स्थायी नशा और *शहंशाह का न्याय*, *इसी सुरज के लिए, पीर की मंजीर*, *पराया सुख* यह कहानीयाँ बड़ी रोचक हैं । इन कहानीयों में समाज की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, न्याय की व्यवस्था पर व्यंग किया है । *प्रधानमंत्री से भेट* इस कहानी में शासन प्रणाली में नागरिकों को प्राप्त अधिकार कितने खोखले होते हैं यह स्पष्ट किया है ।

यशपाल ने जीवन के अनेकानेक पहलुओं की सुक्ष्मता चित्रित किया है । चित्र का शिर्षक में कलाकार की थोथी कलादृष्टी *तुमनें क्यों कहा मैं सुंदर हुँ* में नारी के मन की सहज भावुकता हदय में स्थान कर जाती है ।

व्यंग के साथ साथ, विचारों को प्रवृत्त कराने में यशपाल सफल होते हैं । यशपाल कहानी ज्ञान का उपदेश नहीं कराती अपितु यह कहानियाँ परम्परागत अंध-रुढियों पर प्रहार करती है ।

उनके कहानी में मजदूर वर्ग, हड़ताल आदि का सजीव वर्णन है तो दूसरी और पहाड़ी जीवन की सुन्दर झाँकियाँ तथा प्रकृति की रम्यता है । *प्रेम का सार, पहाड़ी की स्मृति, फुलों का कुर्ता* आदि में पहाड़ी जीवन की सुंदर झाकियाँ देखने को मिलती हैं ।

यशपाल की कहानियों में आरम्भ से अन्त तक पाठक को पकड़ने की विशेष शक्ति है । विषय वस्तु का रोचक विस्तार, प्रभावी संवाद उनकी कहानियों की विशेषता रही है । केवल शब्दों का जाल न होते, मनोविश्लेषनात्मक उनकी शैली अत्यंत मार्मिक है । यशपाल की शैली, सहज सरल हदयग्राही, व्यंगात्मक फिर भी दिल को छुनेवाली है । यथार्थवाद और बौध्दिकता के साथ कला और शब्द सौंदर्य का अत्यंत सुंदर चित्रण उनके कहानी की विशेषता है ।

जीवन की समस्याओं को कलात्मक ढंग से अपनाया है जिसके कारण उनकी कहानियाँ प्रेरणादायी, मानव के लिए औषधी का कार्य करनें में समर्थ हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ :

यशपाल के उपन्यासों का मुल्यांकन - डॉ. सुदर्शन मलहोत्रा
यशपाल अभिनंदन ग्रन्थ.

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com